रहमान भाई

रमेश थानवी

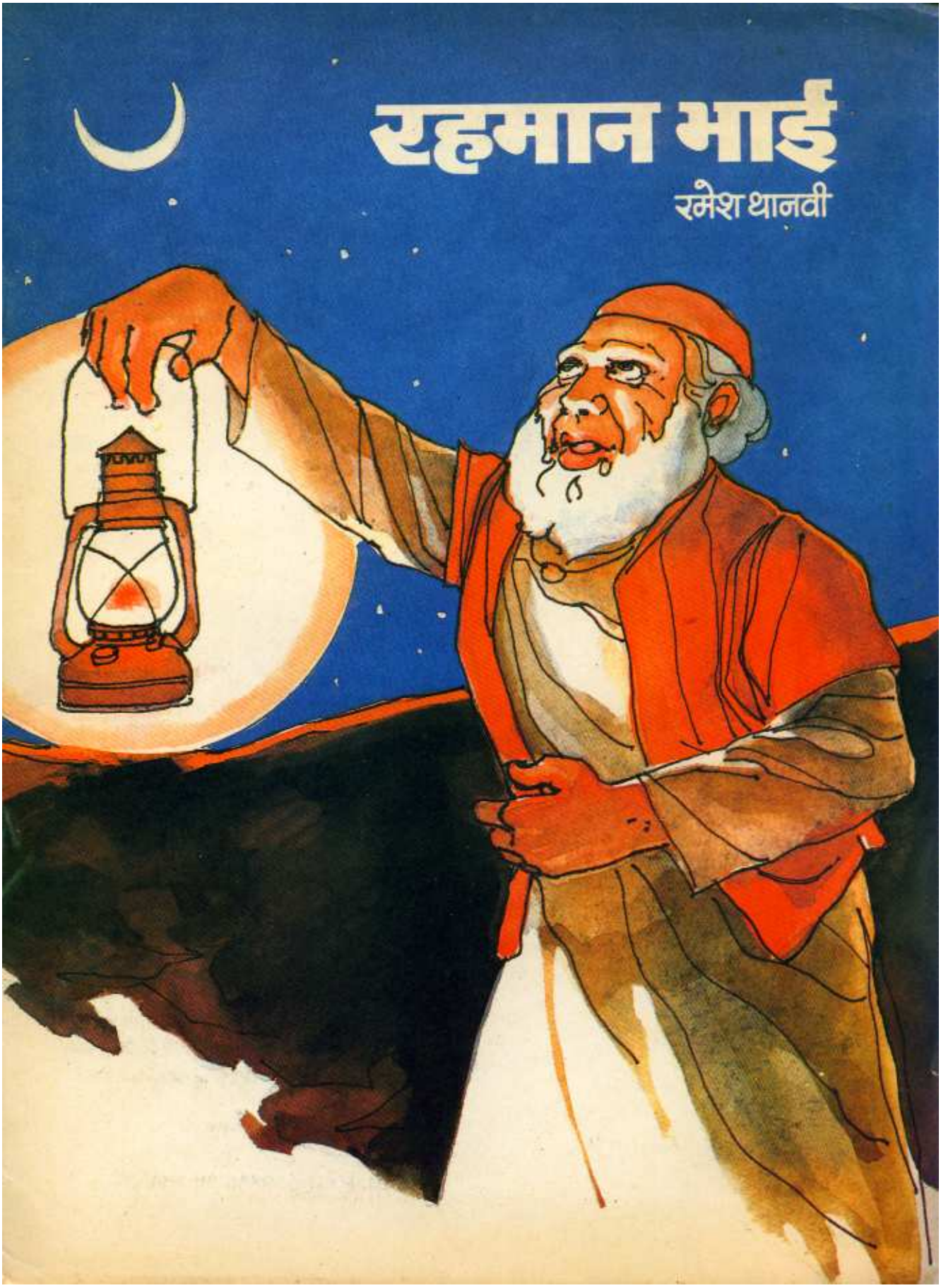

रहमान भाई

मैं बरसों से एक अच्छे अनुदेशक की तलाश में था। गांव-गांव घूमता किसी प्रेरक को भी हेरता-खोजता रहा। किसी सच्चे लोक-शिक्षक के दर्शन की ललक लिए जब मैं भटक रहा था तब मुझे रहमान भाई मिले। उनसे मुलाकात में मेरी मुराद पूरी हुई। बरसों की साध पूरी हुई। मन बहुत हरसाया, पुलकित हुआ और इच्छा हुई कि रहमान भाई को सबसे मिलवा दूं। इसीलिए लिख डाला यह किस्सा। सबकी खुशी के लिए, सबकी मदद के लिए। इस आशा के साथ कि उनकी जलाई कंदील हमारा पथ प्रकाशित करेगी।

- ले.

रहमान भाई
लेखक : रमेश थानवी
संस्करण : प्रथम प्रायोगिक संस्करण फरवरी/1992
प्रकाशन : राज्य संदर्भ केंद्र, राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर-302004
कलापक्ष : एम. ए. जोमराज
मुद्रक : कोटावाला ऑफसैट, जयपुर

RAHMAN BHAI : RAMESH THANVI

रहमान भाई

रमेश थानवी

रहमान भाई

कंदील को साफ कर
बाती का गुल झाड़ कर
बड़ी अदब से जला कर
एक ऊंचे बांस पर टांग आना
उन्हें बहुत भाता था।

रोज शाम उतने ही करीने से
जलती कंदील को
बांस पर टांग आना
और फिर,
दूर तक बिखरी रोशनी को
देर तक देखते रहना,
उनका रोज का काम था।
ऐसा, वो बरसों से कर रहे थे -
बिना नागा।

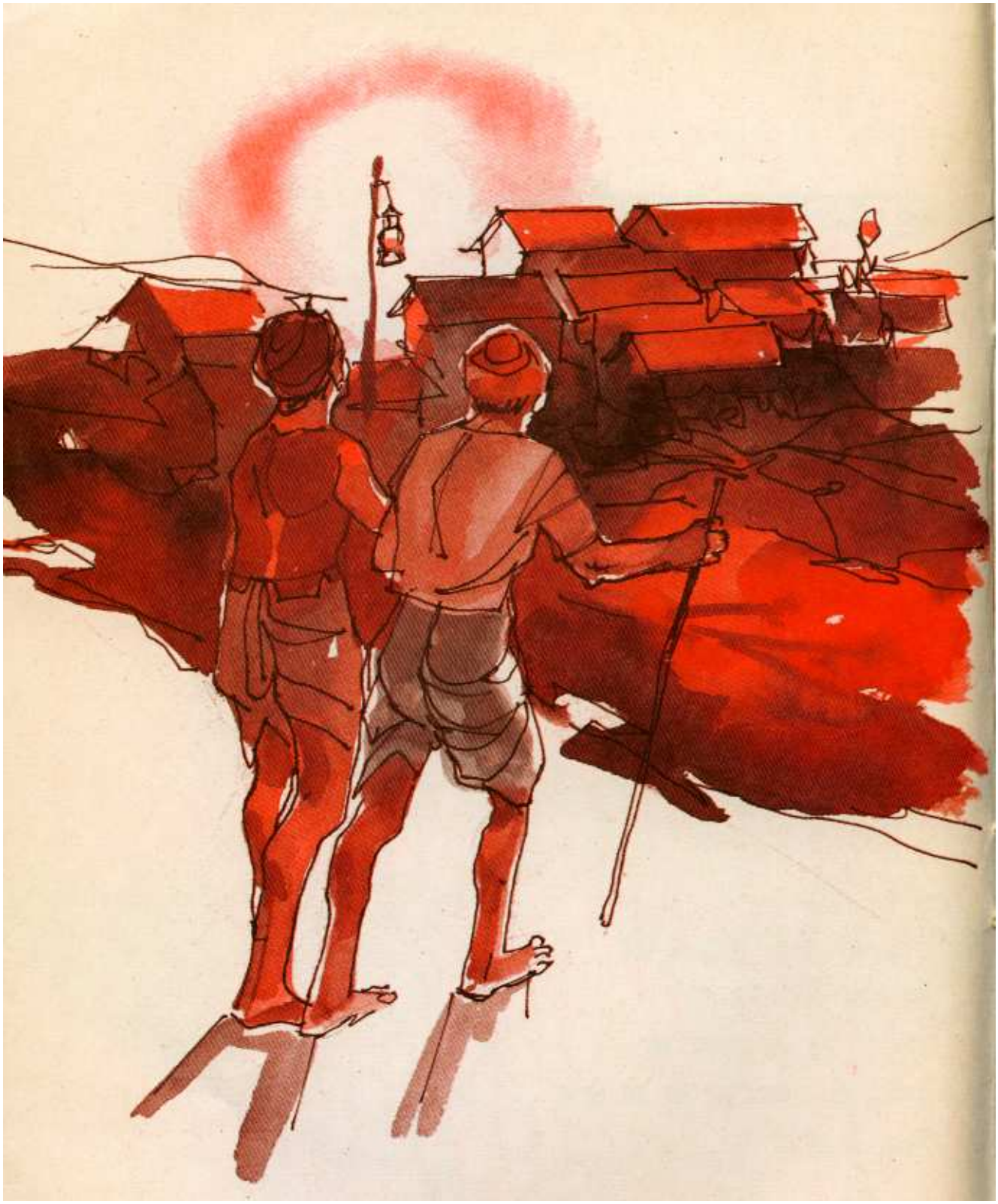

उस कंदील को उन्होंने
कोई नाम नहीं दिया था
कभी पूछा तो यही कहा था
कि यह सांझ का दीया है
मगर यही दीया
उनके गांव की पहचान बन गया था।

लोग उसे 'जलती कंदील का गांव' कहते थे।
कोई उसे दीये वाला गांव बताते थे
और ऐसा रोज होता था
कि दूर से ही इस टिमटिमाते दीये को देख
कुछ लोग रात बिताने
उस गांव पहुंच जाते थे।
तब यह कंदील
उनके पांवों की आंख बन जाती थी
और गांव
सबके लिए खुला
एक रैन-बसेरा।

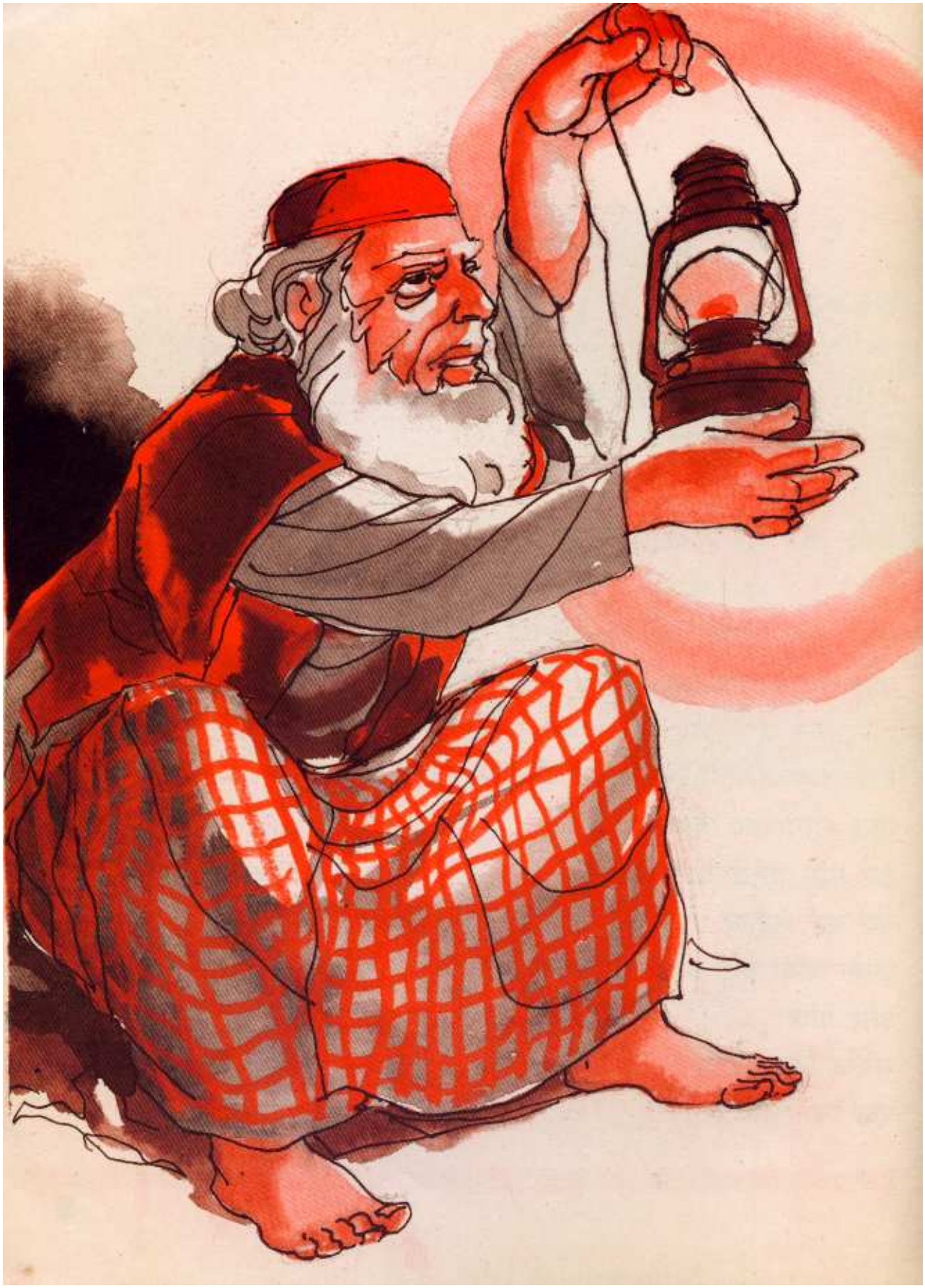

दीये की दमक में
लोगों को बुला लाने की ताकत होती है,
इसे रहमान भाई जानते थे।
जानने से ज्यादा
वे इस सच को जीते थे
और अक्सर कंदील को दुलारते
देखे जा सकते थे।
कंदील, उसकी बाती और
उसकी चमकती चिमनी
उनके करीने की जुबान थी।
तेल और बाती
उनके घर
नमक से पहले खरीदी जाती थी।

रोशनी के साथ ये रूहानी रिश्ता
रहमान भाई की उम्र का सहारा था।
उन्हें दरअसल यह विश्वास था
कि रोशनी मन की उपज है
और घर आंगन के सारे द्वार खोल
सारे जहां में फैल जाना
उसका धरम है।
वे अक्सर कहा करते थे -
'रोशनी कोई परायी चीज नहीं है
जो बाहर से आती है।'

रहमान भाई,
रात रोशनी बिखेरने से शुरू करते थे
और सवेरा
रोज नयी मुलाकात से।
वे बड़े फलसफाना अंदाज में कहते थे
कि ये दुनिया चार दिन का मेला है।
मगर वे यह भी कहते थे रोज
कि आदमी आदमी से मिल कर ही
तरोताजा होता है।

रहमान भाई रोशनी के रखवाले तो थे
मगर रिश्तों के रंगरेज भी।
जो भी उनसे मिलता
उसे वे प्यार से सींच देते थे
ऐसा सराबोर कर लेते थे
कि आपसी प्यार में भीगे-नहाये दोनों लोग
एक रंग हो जाते थे,
एक रूह हो जाते थे।

हर किसी को अपने रंग में रंग देने
का यह हुनर
रहमान भाई ने
विरासत में मिले अपने धंधे से पाया था।
वे पेशे से रंगरेज थे।
कभी पोमचा रंगते थे
तो कभी चूंदड़ी।
कभी लहरिया
तो कभी पंचरंगा साफा।
उनके हाथ के रंगे
पोमचे, लहरिये और बांधणी ओढणे
जाने कितनी दुल्हनों, बेगमों को
सुहाये, पहनाए गये थे।

वे रंगों के उस्ताद थे।
किसी के रंग में रंग जाना
या फिर किसी को अपने रंग में रंग देना
उनका स्वभाव था।
रंगों की उनकी अपनी पहचान थी
मगर इस पहचान के लिए
रोशनी की सदा जरूरत थी
कंदील, तभी तो उन्हें इतनी प्यारी थी।

रिश्तों को वे प्यार से सींचते थे
मगर कोई रिश्ता उनको बांधता नहीं था।
किसी से मिल कर वे जितने खुश नज़र आते थे
उतने ही खुश वे विदा करते हुए भी दीखते थे।
लगता था कि रूहानी रिश्तों के इस झरने में
नहा नहा कर भी
रहमान भाई सदा अकेले हैं
अपने निर्मल तन मन और अपनी कंदील के साथ।

उम्र से बहुत बुजुर्ग थे रहमान भाई
मगर चढ़ती और ढलती उम्र
अपना रंग दिखाने की हर कोशिश में
हार गयी थी।
अंदाज से लोग उनकी उम्र
सत्तर के करीब बताते थे
मगर कोई उनकी आंखों में देखे
तो जवानी, आज भी गरजती दीखती थी।
लोग कहते थे -
'रहमान भाई रोशनी को पिया करते हैं
इसीलिए चेहरा हरदम दमकता रहता है।'
कोई कहता था कि
यह इबादत का असर है।

मगर इबादत भी अनोखी थी उनकी,
कंदील को झाड़ना-पोंछना,
गुल साफ करना, तेल भरना
फिर जला कर खुले आसमां को सौंप आना।
लोग अक्सर पूछते थे
'जलती कंदील को बांस पर क्यूं टांग आते हैं आप?'
रहमान भाई बड़े प्यार से उत्तर देते थे
'मेरे भाई, रोशनी को खुले आकाश की ही जरूरत होती है,
देखो ना, चांद, तारे, सूरज
सभी आकाश में ही तो चमकते हैं।'
कभी वे हंस कर यह भी कह देते थे
'मैं बड़ा मतलबी हूं, बेटा
अल्ला मियां को रोशनी दिखा कर कहता हूं
कि नज़रे इनायत यहां भी रखना।'

बहुत बार ठंढी सांस भर कर
वे यह भी कहते थे -
'लंबी सियाह रातों
का सितम झेलने के बाद भी
कोई रोशनी से यारी नहीं करेगा
तो कहां जायेगा ?'
किसी ने कभी
वापिस यह नहीं पूछा था
कि वे कौन-सी सियाह रातें थीं
और वे कैसे सितम थे ?

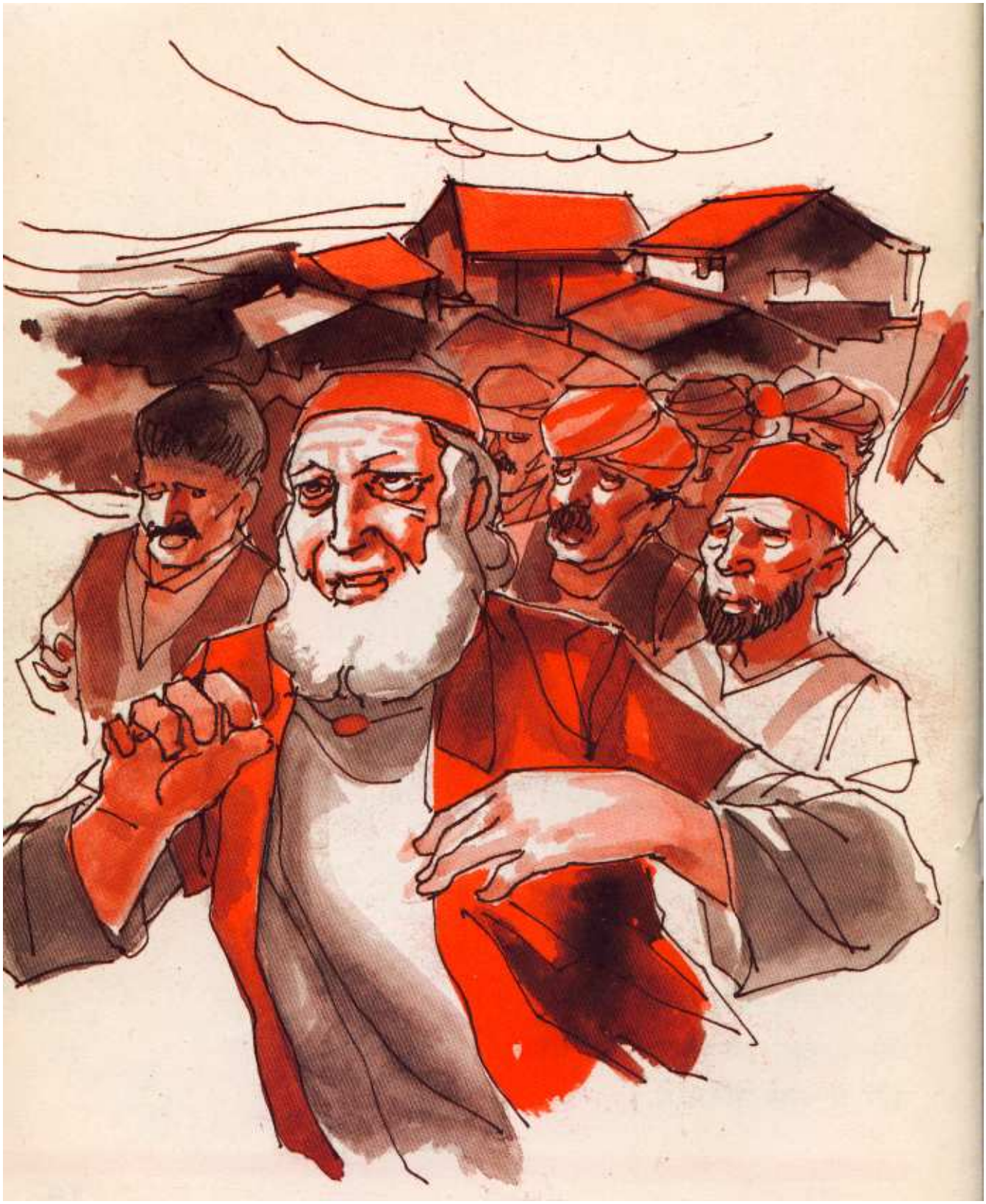

मगर -
रोशनी से रहमान भाई की इस यारी का असर
पूरे गांव पर था।
उनके रहमो करम ने
हर दिल को रोशन किया था।
उनकी मोहब्बत में भीगे थे सब लोग
उनकी करुणा ने
हर घाव पर मरहम लगाया था।

कंदील जलाना
रहमान भाई के लिए
कोई रस्मी काम नहीं था।
ये ऐसा शौक था
जो गहरे उनकी रगों में
रचा-पचा था और
उनकी शख्सियत
का पर्याय बन गया था।

कंदील जलाना
कोई अकेला शौक नहीं था उनका -
एक और भी शौक था रहमान भाई का,
वे किताबें खरीदते थे, पढ़ते थे
और पढ़ पढ़ कर अपनी पंसद की किताबें
पूरे गांव में बांटते थे।
लोग पढ़ लें,
तो वापिस बटोरते थे
फिर नयी किताब दे आते थे।

किसी को भी किताब देने से पहले
वे उस किताब की तारीफ के पुल बांधते थे
इतना समां बांधते थे कि
लेने वाला पढ़ेगा ही।

गांव में बहुत लोग थे जो पढ़ नहीं सकते थे
मगर उनको भी वे पढ़ने के सुख से
वंचित नहीं रखना चाहते थे
खुद उनके पास बैठ
किताब पढ़ कर सुनाते थे।
फिर पूछते थे, कैसी लगी बात -
और बात शुरू हो जाती थी।
रहमान भाई, यूं कई बार
बातों ही बातों में
सारे गांव को फलसफाना बहसों में
उलझा लेते थे।
बात दरअसल इतनी वजनदार होती थी कि
कई बार पूरी सभा जुट जाती थी -
घंटों सोच विचार में डूबी रहती थी।
वे इसे इबादत-सभा कहते थे।
यही उनके स्वभाव की खूबी थी
कि वे हर काम को
इबादत की ओर मोड़ लेते थे।

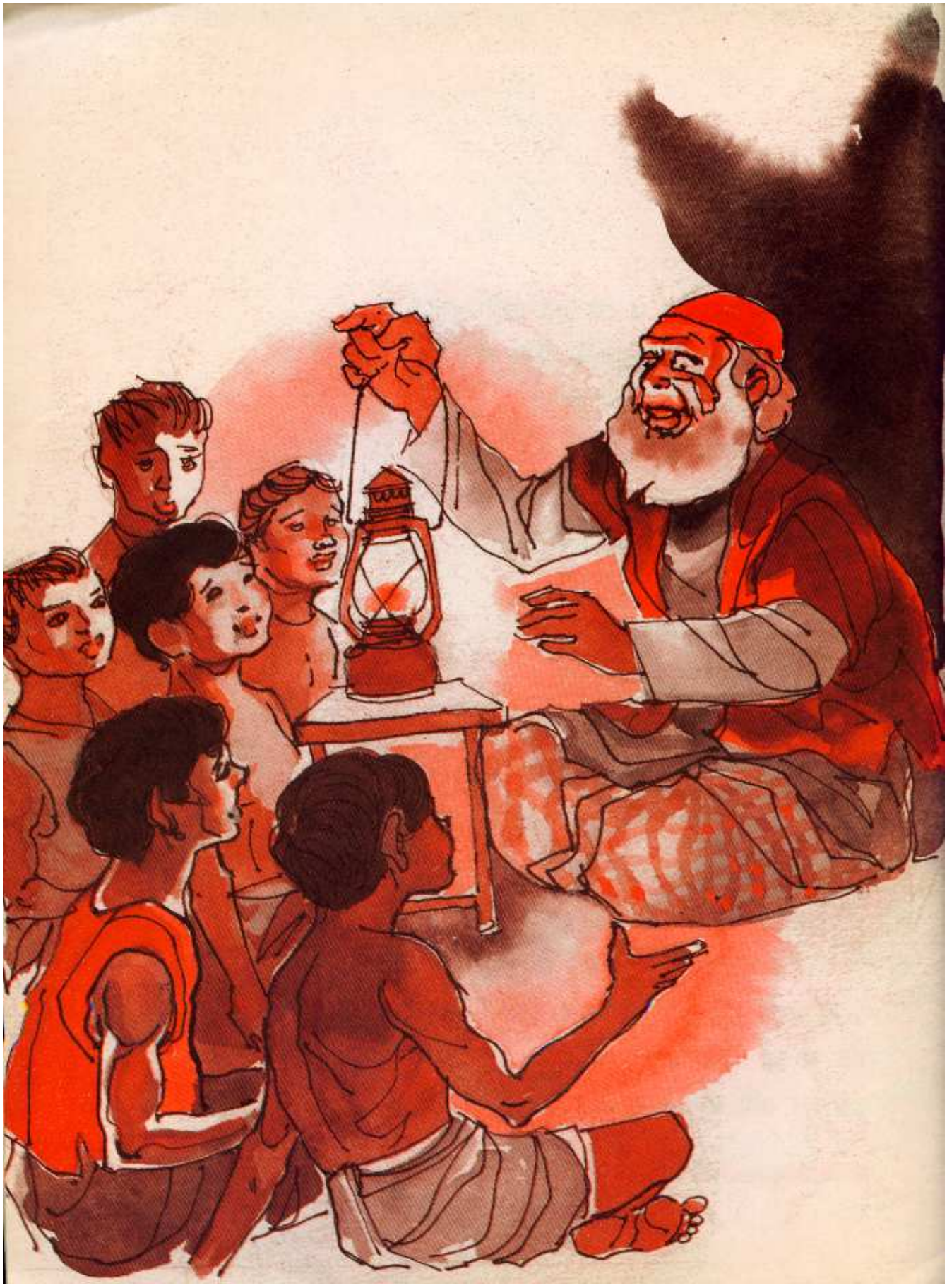

एक और शौक था रहमान भाई का,
बच्चों को किस्से सुनाने का शौक।
वे रोज शाम बच्चों से घिर जाते थे।
वे जब सांझ का दीया कर रहे होते थे,
तब बच्चे उनके साथ होते थे।
अपनी कंदील की रोशनी में
बच्चों के चमकते चेहरे देख
वे पुलकित होते थे,
मन ही मन मुदित होते थे,
रोशनी तब उन्हें
अगली पीढ़ी तक पहुंचती दीखती थी।

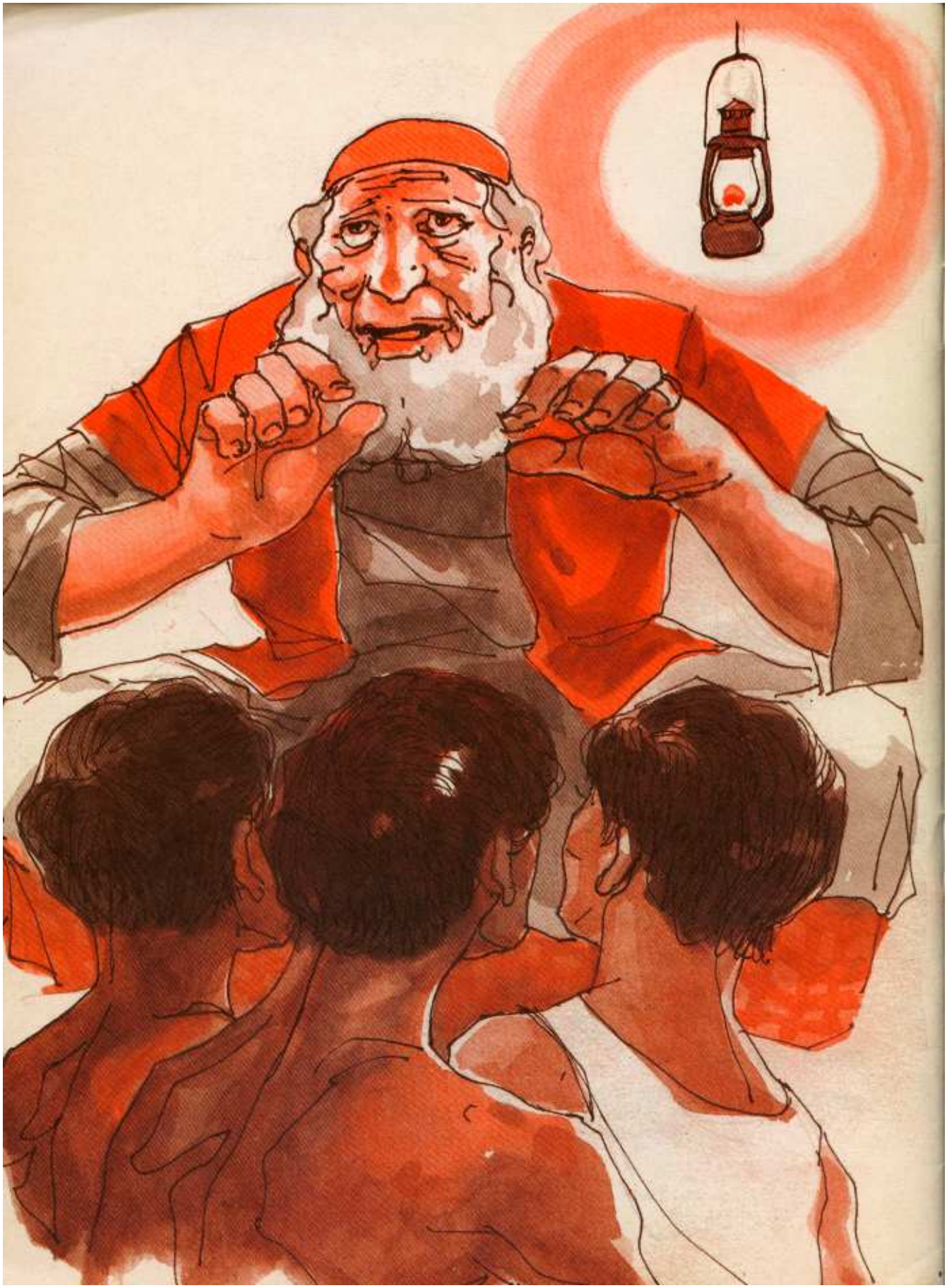

रहमान भाई की किस्सा गोष्ठी
देर रात तक चला करती थी
बच्चे टकटकी बांध सुनते थे
रहमान भाई के हर शब्द को
लपकते दीखते थे।
थोड़ा फासला आते ही पूछते थे
आगे क्या हुआ ?
आगे क्या हुआ ?
आगे क्या हुआ ?
रहमान भाई इसी के उत्तर में खो जाते थे
थोड़ी देर चुप हो जाते थे
किसी दृश्य को हेरती हुई उनकी आंखें
थिर हो जाती थीं
मगर लगता था कि
रहमान भाई कुछ देख रहे हैं.....
जिसे वे बयान नहीं करना चाहते।
बच्चे तो बच्चे ही थे
फिर कंधा झकझोर कर पूछते
आगे क्या हुआ -
और किस्सा आगे सरक जाता था
मगर रहमान भाई के शब्द
इस बार बोझ से लदे होते थे।

अपनी इन किस्सा गोष्ठियों में
जाने कितने किस्से सुनाये थे रहमान भाई ने -
सभी किस्से उनकी आंखों में तैरते लगते थे
और रहमान भाई उनमें बहते रहते थे।

मगर एक किस्सा खास था
टोबा टेक सिंह का किस्सा
इसे रहमान भाई ने
बहुत चाव से सुनाया था
कई बार, बार-बार।

इसे सुनाते हुए
वे अक्सर रो देते थे
बच्चे भी रो देते थे
और रहमान भाई
उनके ढुलकते आंसू पोंछ
तुरंत किस्सा बदल लेते थे।

बच्चे भला कैसे जानते
कि इसी किस्से से जुड़ा था
उनका अपना किस्सा
कि वे कौन थे?
कहां से आये थे? कब आये थे?
क्या साथ लाये थे?
और क्या पीछे छोड़ आये थे?
बच्चे भला कैसे जानते -
कैसे जानते ?

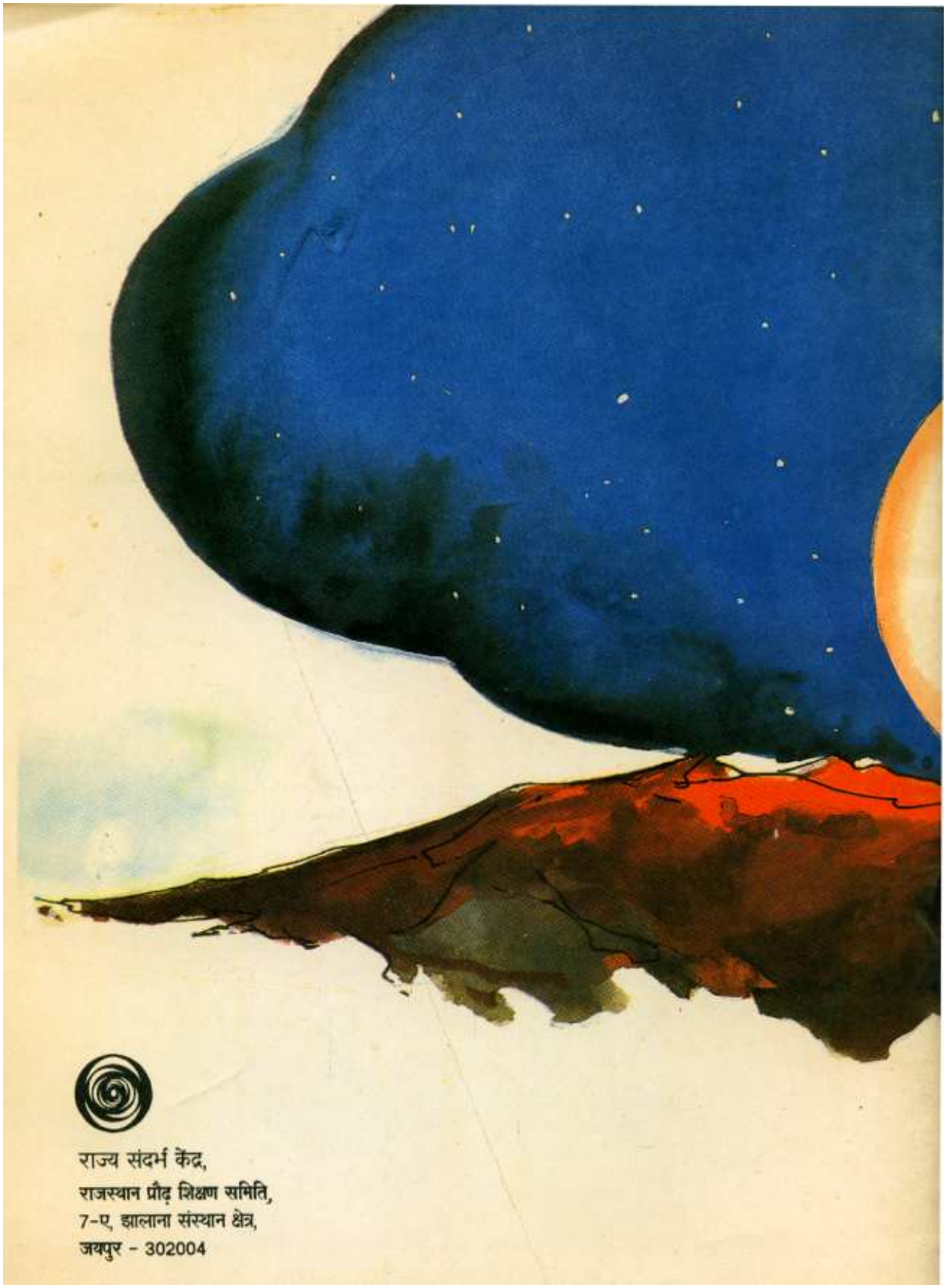

राज्य संदर्भ केंद्र,
राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति,
7-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर - 302004